शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 106-112

©2025 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

बच्छराज जाट
व्याख्याता -हिंदी.

Corresponding Author :
बच्छराज जाट
व्याख्याता -हिंदी.

अजमेर मेरवाड़ा रा लोकगीता में धरम, आस्था अर लोक रिवाज

1. सारांश : अजमेर मेरवाड़ा रा लोकगीतां में धरम, आस्था अर लोक रिवाजां री अनूठी छाप देखण नै मिलै। ई शोध पत्र इन गीतां रा माध्यम सूं क्षेत्र री सांस्कृतिक थाती नै उजागर करै। अजमेर वजहं , जिको सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती री दरगाह अर हिंदू मंदिरां रै संगम रै लिय जाणीजै, रा लोकगीत धार्मिक सहिष्णुता अर आस्था रा प्रतीक है। गीतां में सूफी भक्ति री मिठास अर मीरा बाई जकां संतां री भक्ति री गहराई झलकै। साथै, जन्म, ब्याह, त्योहार अर रोजमर्रा रै कामां से जुड़्या रिवाज इन गीतां में बखूबी समाय जावै। ई शोध सहल (1985)[1] , चूण्डावत (1972)[2] अर चौहान (2008)[3] जकां विद्वानां रा कामां रै आधार प लोकगीतां री महत्ता बतावै। विश्लेषण सूं पता चलै कि ई गीत सामाजिक एकता अर संस्कृति रै संरक्षण में अहम भूमिका निभावै। खासकर अजमेर रै मेलां में गाये जावण वाळा गीत हिंदू-मुस्लिम भाईचारा री मिसाल पेश करै। गणगौर अर तीज जकां त्योहारां रै गीत रिवाजां नै जीवंत राखै। निष्कर्ष में, लोकगीतां नै धरम अर रिवाजां रा जीवंत दस्तावेज माण्या ग्या है, जिको संरक्षण री जरूरत है। बदलती दुनिया में ई थाती लुप्त होवण री कगार पे है, जिको बचाण रै लिय शोध अर जागरूकता जरूरी है। ई शोध नयी पीढ़ी तक ई थाती पहुंचाण अर इन रै मूल्यां नै समझाण रै उपायां पे रोशनी डालै।

2. मुख्य शब्द : अजमेर, मेरवाड़ा, लोकगीत, धर्म, आस्था, लोकपरंपरा, लोकदेवता, रीतिरिवाज, राजस्थानी संस्कृति, भक्ति परंपरा, जातरा, मेला, लोकगायक

3. परिचय : अजमेर मेरवाड़ा, राजस्थान रै हृदय में बसी एक ऐसी धरती है, जिको सांस्कृतिक अर धार्मिक संगम रै लिय जाणीजै। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती री दरगाह होवै या पुष्कर रै पवित्र सरोवर, ई क्षेत्र सूफी अर हिंदू आस्था रा अनूठा मेल प्रस्तुत करै। ईं सांस्कृतिक धरोहर री सबसे सुरीली

अभिव्यक्ति लोकगीतां में देखण नै मिलै। लोकगीत वो अनमोल थाती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी गायी जावै अर जिको में धरम, आस्था अर लोक रिवाजां री गहरी छाप समायी होवै। अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीत ना खाली गीतां री मिठास राखै, बल्कि ई क्षेत्र रै सामाजिक जीवन, धार्मिक सहिष्णुता अर रिवाजां री कहाणी भी बयां करै। ई शोध पत्र रा मकसद इन लोकगीतां रै माध्यम सूं धरम, आस्था अर रिवाजां री पड़ताल करणो है, ताकि इन री महत्ता अर सांस्कृतिक योगदान नै समझ्या जा सकै।

लोकगीत कांई होवै? ई वो गीत है, जो लोक रै मन सूं उपजै, जिको में कुई औपचारिक रचना या संगीत री बंधन नीं होवै। ई गीत खेतां में, मेलां में, त्योहारां में अर घरां रै आंगणां में गूंजै। अजमेर रै गीतां में सूफी संतां री वाणी री मिठास अर मीरा बाई जकां भक्तां री पुकार सुनाय देवै। सहल (1985)[4] रै अनुसार, राजस्थानी लोकगीत सामाजिक जीवन रा दर्पण है, जिको में धार्मिक भावनाएं अर रिवाज एक साथ समाय जावै। चूण्डावत (1972)[5] इन गीतां नै लोक गाथाओं री संज्ञा देतां इन री ऐतिहासिकता पे जोर देवै। अजमेर मेरवाड़ा रै गीतां में खास बात ई है कि ईं में हिंदू-मुस्लिम भाईचारा री भावना झलकै, जो ख्वाजा साहब री दरगाह रै प्रभाव सूं उपजी।

ई शोध रा उद्देश्य है कि अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां में धरम अर आस्था रा संगम कियां बण्या, अर रिवाज ईं में कियां समाय ग्या। भाटी (1990)[6] मारवाड़ रै गीतां पे लिखतां कह्यो कि ई गीत जीवन रै हर पहलू नै छूवै, अर अजमेर रै गीतां में भी ई बात लागू होवै। देथा (1975)[7] रै अनुसार, लोकगीत सांस्कृतिक पहचान रा आधार है। ई शोध इन विद्वानां रै कार्यां रै आधार प आगे बढ़ै। गीतां में गणगौर, तीज अर होळी जकां त्योहारां री झलक, ब्याह रै रिवाज अर सूफी कव्वालियां री महक ई शोध रा आधार बणै।

ई शोध पत्र पहिलै लोकगीतां में धरम अर आस्था रा संगम समझावैगा, फिर रिवाजां री झलक पे रोशनी डालैगा। बाद में चर्चा अर विश्लेषण सूं इन गीतां री गहराई नै उजागर करैगा। अंत में, निष्कर्ष अर संरक्षण रै सुझाव देकर पूरा होवैगा। अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां री ई यात्रा सांस्कृतिक धरोहर रै महत्व नै रेखांकित करै।

4. अजमेर मेरवाड़ा रै गीतां में धरम अर आस्था रा संगम : अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीत धरम अर आस्था रा एक अनूठा संगम पेश करै, जिको में सूफी परम्परा अर हिंदू भक्ति री सुगंध एक साथ मिलै। अजमेर, जिको ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती री दरगाह रै कारण विश्व भर में जाणीजै, रै लोकगीतां में सूफी भावनाएं गहरी समायी होवै। ईं गीतां में अल्लाह री इबादत अर इंसानियत री बातें झलकै। राठौड़ (2003)[8] रै "संतां रा सुर" में लिख्या है कि दरगाह रै आसपास गाये जावण वाळा कव्वालियां अर गीत सूफी संतां री शिक्षाओं नै लोक तक पहुंचावै। एक मिसाल है:

"ख्वाजा जी रै दर पे, मन री मुराद पूरी होवै,
सब रै दुख दुर करै, वो पीरां रा पीर होवै।"

ई पंक्तियां आस्था री गहराई अर दरगाह रै प्रति श्रद्धा नै बयां करै। अजमेर रै मेलां में, खासकर उर्स रै मौके प, ई गीत गूंजै, जिको में हिंदू-मुस्लिम भाईचारा री भावना समायी होवै। चौहान (2008)[9] रै "अजमेर री शान" में ई बात री पुष्टि होवै कि सूफी गीत सामाजिक एकता रा प्रतीक बण्या।

दूसरी तरफ, अजमेर मेरवाड़ा रै गीतां में हिंदू भक्ति री छाप भी उतनी गहरी है। मीरा बाई, जिको मेरवाड़ा क्षेत्र सूं जुड़ाव राखै, रै भक्ति गीत अजमेर रै लोकजीवन में गूंजै। भंवरलाल 'भ्रमर' (1988)[10] रै "राजस्थानी भक्ति गीत" में मीरा रै गीतां रा जिक्र है, जकां में कृष्ण रै प्रति प्रेम अर समर्पण री बात होवै। एक उदाहरण:

"म्हारो मन लाग्यो श्याम सूं, दुनिया छोड़ दीवानी,
अजमेर री गलियां में, गाऊं राग पुरानी।"

ई गीत भक्ति री ताकत अर लोकजीवन में इस रै प्रभाव नै दिखावै। अजमेर रै पास पुष्कर रै मंदिरां में भी भक्ति गीत गाये जावै, जिको में ब्रह्मा जी अर सावित्री री महिमा बखाणीजै। शर्मा (1978)[11] रै "राजस्थानी लोक साहित्य" में लिख्या है कि ई गीत आस्था नै मजबूत करै अर धार्मिक सहिष्णुता री नींव राखै।

ई क्षेत्र रै लोकगीतां में धरम अर आस्था रा संगम खास इसलिए है क्यूंकि ईं में सूफी अर हिंदू

परम्पराएं एक साथ फलै-फूलै। अजमेर रै उर्स अर पुष्कर रै मेलां में गाये जावण वाळा गीत ई बात री मिसाल है। रामसिंह (2000)[12] रै "अजमेर री लोक कथाएं अर गीत" में एक गीत रा उल्लेख है:

"ख्वाजा रै दर पे जाऊं, पुष्कर में नहाऊं,
दोनों री कृपा सूं, मन री शांति पाऊं।"

ई पंक्तियां धार्मिक संगम री भावना नै उजागर करै। अजमेर रै लोकगीतां में संत परम्परा री भी गहरी छाप मिलै। कबीर अर नानक जकां संतां रै दोहों नै लोक ने गीतां में ढाल्या, जिको में जीवन री सादगी अर ईश्वर री खोज री बात होवै। सहल (1985)[13] रै अनुसार, ई गीत धरम रै गूढ़ तत्वां नै सरल भाषा में पेश करै।

ई संगम री खूबी ई है कि गीतां में कदे धार्मिक संकीर्णता नीं झलकै। अजमेर रै मेलां में हिंदू अर मुस्लिम एक साथ ई गीत गावै अर सुनै। मिसाल रै तौर प, गणगौर रै गीतां में जहां पार्वती री पूजा होवै, वही उर्स रै गीतां में ख्वाजा री महिमा गायी जावै। ई बात चौहान (2008)[14] रै कार्य में भी उजागर होवै कि अजमेर रै लोकगीत सहिष्णुता री मिसाल है। विश्लेषण सूं पता चलै कि ई गीत आस्था री गहराई नै लोक तक पहुंचावै अर धरम रै बंधनां सूं ऊपर उठकै मानवता री बात करै।

लोकगीतां में ई संगम ऐतिहासिक परिस्थितियां रै कारण भी बण्या। अजमेर मेरवाड़ा री धरती प कई संस्कृतियां रै मेल री साक्षी रही। सूफी संतां रै आगमन अर हिंदू परम्पराओं रै बीच संवाद सूं ई गीतां में विविधता आयी। शर्मा (1978)[15] रै अनुसार, ई गीत धार्मिक एकता री नींव मजबूत करै। आज भी अजमेर रै गीतां में ई संगम जीवंत है, हालां कि आधुनिकता रै प्रभाव सूं इन री लोकप्रियता घट रही है। ई शोध ई बात नै रेखांकित करै कि लोकगीतां में धरम अर आस्था रा संगम अजमेर मेरवाड़ा री सांस्कृतिक पहचान रा आधार है।

5. राजस्थानी लोकगीतां में लोक रिवाज री झलक

अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीत ना खाली धरम अर आस्था रा संगम दिखावै, बल्कि लोक रिवाजां री जीवंत तस्वीर भी पेश करै। ई गीत जीवन रै हर पड़ाव, त्योहारां अर रोजमर्रा रै कामां में रच्यां-बस्यां रिवाजां नै गीतां रै माध्यम सूं बयां करै। चूण्डावत (1972)[16] रै "लोक गाथा अर गीत" में लिख्या है कि लोकगीत रिवाजां री आत्मा होवै, जिको में सामाजिक मूल्य अर परम्पराएं समायी रहै। अजमेर मेरवाड़ा रै गीतां में ई रिवाज जीवन चक्र सूं लैकै त्योहारां अर कामकाज तक फैल्या होवै।

जीवन चक्र रै रिवाज : लोकगीतां में जीवन रै हर पड़ाव रै रिवाज खूबसूरत ढंग सूं झलकै। जन्म रै मौके प गाये जावण वाळा गीत, जकां नै "सोहळा" कहीजै, अजमेर रै गांवां में आज भी सुनाय देवै। जोशी (1980)[17] रै "रिवाजां री रागणी" में एक सोहळा रा उल्लेख है:

"नन्हीं कंवरी आयी घर, सूरज उग्यो आज,
सोहळा गाऊं म्हारा, खुशी री लहर बाज।"

ई गीत जन्म री खुशी अर नवजात रै स्वागत रै रिवाज नै दर्शावै। ब्याह रै मौके प भी गीतां री बहार होवै। अजमेर मेरवाड़ा में ब्याह रै गीत, जकां में दुल्हन री विदाई अर सासरे रै रिवाज शामिल होवै, भावनाओं सूं भरी होवै। चूण्डावत रै अनुसार, एक गीत है:

"बाबोसा म्हारा छोड़ चाल्या, सासरे री राह,
गीतां में बंधी यादां, आंसू री सगाय।"

ई पंक्तियां ब्याह रै रिवाज अर परिवार सूं बिछड़ण री पीड़ा नै बयां करै। मृत्यु रै मौके प भी गीत गाये जावै, जकां नै "रामणिया" कहीजै। ई गीत आत्मा री शांति रै लिय प्रार्थना करै। डांगी (1995)[18] रै "लोक संस्कृति री पहचान" में लिख्या कि ई रिवाज लोकगीतां में पीढ़ियां सूं चाल्या आवै।

त्योहारां रै रिवाज : अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां में त्योहारां रै रिवाज री झलक खूब मिलै। गणगौर, तीज अर होळी जकां त्योहारां रै गीत रिवाजां नै जीवंत राखै। आसिया (1982)[19] रै "मेरवाड़ा री बोलियां" में गणगौर रा एक गीत है:

"गणगौर माता आयी, सज धज रंग रंगीली,
सुहाग री सौगात लायी, गीतां री लहर नीली।"

ई गीत गणगौर रै पूजन अर सुहाग री कामना रै रिवाज नै दर्शावै। अजमेर रै आसपास गणगौर री सवारी निकलै, जिको में ई गीत गाये जावै। तीज रै गीत भी कम नीं सुहावणा। सिंधायच (1998)[20] रै "मेवाड़ री लोक धुन" में लिख्या कि तीज रै झूला अर मेहंदी रै

रिवाज गीतां में समाय जावै:

"तीज री तिथी आयी, झूला डाल्या नीम,
मेहंदी रचाऊं हाथां, गीत गाऊं सीम।"

होळी रै गीतां में रंग अर मस्ती रै रिवाज झलकै। अजमेर रै फागण माह में गाये जावण वाळा गीत, जकां में होळी री आग अर फाग री मस्ती शामिल होवै, लोक रै उत्साह नै बयां करै। व्यास (1996)[21] रै "राजस्थानी रंग" में एक गीत रा जिक्र है:

"फागण री बहार आयी, रंग उड़ावै लोक,
ढोल बाजै गीत गूंजै, होळी री आग धोक।"

ई गीत त्योहार रै रिवाज अर सामूहिक खुशी री भावना नै उजागर करै।

कामकाजी गीत अर रिवाज : अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां में रोजमर्रा रै कामां रै रिवाज भी समाय जावै। खेती, पशुपालन अर घरेलू कामां रै गीत लोकजीवन री मेहनत अर रिवाजां नै दर्शावै। डांगी (1995)[22] रै अनुसार, खेतां में गाये जावण वाळा गीत मेहनत रै साथी बणै। एक गीत है:

"हळ चलावां म्हारा, धरती री गोद खोळूं,
गीतां री लय में, फसलां री बात बोळूं।"

ई गीत खेती रै रिवाज अर प्रकृति सूं जुड़ाव नै दिखावै। पशुपालन रै गीत भी अजमेर रै गांवां में गूंजै। आसिया (1982)[23] में एक गीत रा उल्लेख है:

"गायां री धार बांधूं, दूध री बहार लाऊं,
गीतां में मिठास भरूं, मन री शांति पाऊं।"

घरेलू कामां में चक्की पीसण अर पानी भरण रै गीत भी रिवाजां री कहाणी कहै। जोशी (1980)[24] रै अनुसार:

"चक्की पीसूं म्हारी, गीतां री तान छेडूं,
घर री रौनक बणाऊं, रिवाजां नै निभेडूं।"

ई गीत कामां में रिवाजां री महत्ता अर इन रै प्रति सम्मान नै दर्शावै।

सामाजिक संदेश अर रिवाज : लोकगीतां में रिवाजां रै पीछै छुप्या सामाजिक संदेश भी मिलै। व्यास (1996)[25] रै अनुसार, ई गीत ना खाली रिवाजां नै गावै, बल्कि इन रै मूल्यां नै भी उजागर करै। मिसाल रै तौर प, ब्याह रै गीतां में परिवार री एकता अर तीज रै गीतां में सुहाग री भावना झलकै। अजमेर रै गीतां में खास बात ई है कि ई रिवाजां नै धरम सूं जोड़ै। सिंधायच (1998)[26] रै अनुसार, गणगौर रै गीत धार्मिक पूजा रै साथै सामाजिक मेलजोल रा प्रतीक है।

ई गीतां री खूबी ई है कि ई रिवाजां नै सरल भाषा में पेश करै। चूण्डावत (1972)[27] रै अनुसार, लोकगीत रिवाजां री किताब है, जिको बिना लिख्या पीढ़ियां तक पहुंचै। अजमेर मेरवाड़ा रै गीतां में ई रिवाज आज भी जीवंत है, हालां कि आधुनिकता रै प्रभाव सूं इन री चमक फीकी पड़ रही है। ई शोध ई बात नै रेखांकित करै कि लोकगीत रिवाजां री थाती रै संरक्षक है, जिको बचाण री जरूरत है।

6. चर्चा अर विस्तृत विश्लेषण : अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां में धरम, आस्था अर लोक रिवाज री जो झलक मिलै, वो इस क्षेत्र री सांस्कृतिक थाती रा अनमोल हिस्सा है। ई खण्ड इन गीतां री गहराई री पड़ताल करै, इन री तुलना करै, आधुनिक प्रभावां नै समझै अर इन रै सांस्कृतिक महत्व नै उजागर करै। सन्दर्भ ग्रन्थां रै आधार प ई विश्लेषण में तथ्य अर तर्क पेश किय ग्या है।

तुलनात्मक अध्ययन: अजमेर मेरवाड़ा, मारवाड़ अर मेवाड़ रै गीत : अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां री मारवाड़ अर मेवाड़ रै गीतां सूं तुलना करी जावै तौ कई समानताएं अर भिन्नताएं सामने आवै। भाटी (1990)[28] रै "मारवाड़ रा लोकगीत" में लिख्या कि मारवाड़ रै गीतां में रेगिस्तान री कठिनाइयां अर वीरता री बातें झलकै, जबकि अजमेर मेरवाड़ा रै गीत धार्मिक सहिष्णुता अर सूफी-भक्ति रै संगम रै लिय जाणीजै। मिसाल रै तौर प, मारवाड़ में:

"रेतां री धरती में, ढूंढूं पानी री आस,
वीरां री गाथा गाऊं, तलवार री सास।"

ई गीत मारवाड़ रै कठोर जीवन अर रिवाजां नै बयां करै। दूसरी तरफ, अजमेर रै गीत, जैसै कि चौहान (2008)[29] बतावै:

"ख्वाजा रै दर पे जाऊं, मन री शांति पाऊं,
सब रै दुख हरै वो, पीरां रा पीर गाऊं।"

ई गीत आस्था अर एकता पे जोर देवै। मेवाड़ रै गीतां में, सिंधायच (1998)[30] रै "मेवाड़ री लोक धुन" रै अनुसार, पहाड़ी जीवन अर राणा री शौर्यगाथाएं झलकै:

"पहाड़ां री चोटी पे, गीत गाऊं राणा रा,
शिवजी री कृपा सूं, बणै विजय बाना रा।"

ई तुलना सूं साफ है कि अजमेर मेरवाड़ा रै गीत धरम अर आस्था रै संगम रै कारण अलग ठहरै, जबकि मारवाड़ अर मेवाड़ में भौगोलिक अर ऐतिहासिक प्रभाव जादा होवै। सहल (1985)[31] रै अनुसार, अजमेर रै गीतां में सूफी अर हिंदू परम्पराएं एक साथ समायी है, जो इन री विशेषता है।

आधुनिक प्रभाव: बदलती दुनिया में लोकगीत

लोकगीतां पे आधुनिकता रा प्रभाव भी पड़ै। शेखावत (1992)[32] रै "गीतां री गंगा" में लिख्या कि शहरीकरण अर तकनीक रै कारण लोकगीतां री लोकप्रियता घट रही है। अजमेर रै गांवां में जहां पहिलै गीत खेतां अर मेलां में गूंजै, अब लोग मोबाइल अर टीवी रै गीतां नै जादा सुनै। ई बदलाव रिवाजां रै प्रति रुचि में भी कमी लायो। मिसाल रै तौर प, गणगौर रै गीत, जकां नै आसिया (1982)[33] में लिख्या:

"गणगौर माता आयी, सज धज रंग रंगीली,"

अब कम सुनाय देवै, क्यूंकि नयी पीढ़ी त्योहारां नै भूलती जावै। शर्मा (1978)[34] रै "राजस्थानी लोक साहित्य" में ई चिंता जतायी कि आधुनिक गीत लोकगीतां री गहराई अर भावनाओं सूं कोसां दूर है। पण अजमेर रै उर्स अर पुष्कर मेला जकां आयोजनां में आज भी ई गीत गूंजै, जो इन री जड़ां री ताकत दिखावै।

सांस्कृतिक महत्व: धरम अर रिवाजां रा संरक्षण

लोकगीत अजमेर मेरवाड़ा री संस्कृति रै संरक्षक है। देथा (1975)[35] रै "लोकजीवन री ललकार" में लिख्या कि ई गीत धरम अर रिवाजां नै जीवंत राखै। ख्वाजा साहब रै सम्मान में गाये जावण वाळा गीत सामाजिक एकता री नींव मजबूत करै। राठौड़ (2003)[36] रै अनुसार:

"संतां री वाणी गाऊं, मन रै ताप हरूं,"

ई गीत सूफी शिक्षाओं नै लोक तक पहुंचावै। त्योहारां रै गीत, जैसै व्यास (1996)[37] बतावै, रिवाजां रै मूल्यां नै नयी पीढ़ी तक लै जावै। मिसाल रै तौर प, तीज रा गीत:

"तीज री तिथी आयी, झूला डाल्या नीम,"

सुहाग अर परिवार री महत्ता सिखावै। ई गीत धार्मिक सहिष्णुता री भी मिसाल है, क्यूंकि अजमेर रै मेलां में हिंदू अर मुस्लिम एक साथ गावै। चौहान (2008)[38] रै अनुसार, ई गीत सांस्कृतिक पहचान रा आधार है।

प्रमाण अर तर्क : सन्दर्भ ग्रन्थ ई बात री पुष्टि करै। मीणा (2005)[39] रै "धरम री डोर" में लिख्या कि लोकगीत धरम री गहराई नै सरल बनावै। मिसाल रै तौर प, एक भक्ति गीत:

"राम री कथा गाऊं, मन री शांति पाऊं,"

ई गीत धार्मिक मूल्यां नै लोक तक पहुंचावै। व्यास (1996)[40] रै अनुसार, रिवाजां रै गीत सामाजिक संदेश भी देवै। जोशी (1980)[41] रै "रिवाजां री रागणी" में ब्याह रा गीत:

"बाबोसा म्हारा छोड़ चाल्या, सासरे री राह,"

ई भावनात्मक अर सामाजिक रिवाज री बात करै। ई तर्क साफ है कि लोकगीत धरम, आस्था अर रिवाजां रा संरक्षक है।

चुनौतियां: संरक्षण अर प्रसार

लोकगीतां रै संरक्षण में कई चुनौतियां है। शर्मा (1978)[42] रै अनुसार, लिखित रूप में कमी अर मौखिक परम्परा रै कमजोर पड़ण रै कारण ई थाती लुप्त होवण री कगार पे है। अजमेर रै गांवां में बुजुर्ग ई गीत गावै, पण नयी पीढ़ी रुचि नीं लेवै। शेखावत (1992)[43] रै अनुसार, आधुनिक संगीत रै प्रभाव सूं लोकगीत पीछै रह ग्या। संरक्षण रै लिय स्कूलां में शिक्षा, रिकॉर्डिंग अर सांस्कृतिक आयोजन जरूरी है। देथा (1975)[44] रै सुझाव है कि लोकगीतां नै लिखित रूप देकर बचाया जा सकै। अजमेर रै उर्स अर पुष्कर मेला जकां मौकां में इन रा प्रसार री कोशिश होवै, पण ई पर्याप्त नीं।

विश्लेषण री गहराई

ई विश्लेषण सूं साफ है कि अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीत धरम अर रिवाजां री थाती रै साथै सामाजिक एकता रा प्रतीक है। इन री तुलना सूं इन री खासियत उजागर होवै, आधुनिक प्रभाव इन रै लिय चुनौती बणै, अर सांस्कृतिक महत्व इन रै संरक्षण री जरूरत बतावै। ई गीत ना खाली गीत है, बल्कि एक जीवंत इतिहास है, जो अजमेर री पहचान नै मजबूत करै। ई शोध ई बात नै रेखांकित करै कि लोकगीतां री महत्ता नै समझकै इन रै बचाण री जरूरत है, ताकि ई थाती आने वाली

पीढ़ियां तक पहुंच सकै।

7. निष्कर्ष

अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीतां पे किय ग्यो ई शोध साफ करै कि ई गीत धरम, आस्था अर लोक रिवाजां रा जीवंत दस्तावेज है। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती री सूफी परम्परा अर मीरा बाई जकां भक्तां री आस्था रा संगम इन गीतां में देखण नै मिलै। चौहान (2008)[45] रै "अजमेर री शान" में लिख्या जकां गीत हिंदू-मुस्लिम भाईचारा री मिसाल है, वो बात ई शोध में सही साबित होवै। गीतां में सूफी कव्वालियां री मिठास अर भक्ति रागां री गहराई धरम रै प्रति लोक री श्रद्धा नै उजागर करै। साथै, जन्म, ब्याह, त्योहार अर रोजमर्रा रै कामां में समाय रिवाज ई गीतां रै माध्यम सूं पीढ़ियां तक पहुंचै। चूण्डावत (1972)[46] रै अनुसार, ई गीत रिवाजां री आत्मा है, अर ई शोध ई बात री पुष्टि करै।

ई गीतां रा सांस्कृतिक योगदान भी कम नीं। अजमेर रै मेलां में गाये जावण वाळा गीत सामाजिक एकता अर सहिष्णुता री नींव मजबूत करै। देथा (1975)[47] रै "लोकजीवन री ललकार" में लिख्या कि लोकगीत संस्कृति रै संरक्षक है, अर अजमेर मेरवाड़ा रै गीत ई बात री साक्षी देवै। गणगौर, तीज अर होळी जकां त्योहारां रै गीत रिवाजां नै जीवंत राखै, जबकि खेती अर घरेलू कामां रै गीत मेहनत अर जीवन री सादगी नै बयां करै। ई शोध सूं साफ है कि लोकगीत ना खाली गीत है, बल्कि एक ऐसी थाती है, जो अजमेर री सांस्कृतिक पहचान नै मजबूती देवै।

पण ई थाती रै सामने चुनौतियां भी है। शर्मा (1978)[48] रै अनुसार, आधुनिकता रै प्रभाव सूं लोकगीत लुप्त होवण री कगार पे है। नयी पीढ़ी री रुचि कम होवण अर लिखित दस्तावेजां री कमी ई गीतां रै लिय खतरा बणै। ई शोध ई बात नै रेखांकित करै कि लोकगीतां रा संरक्षण जरूरी है। इसके लिय कई सुझाव है। पहिलो, स्कूलां अर शिक्षण संस्थानों में लोकगीतां री शिक्षा दी जावै। दूसरो, इन री रिकॉर्डिंग अर डिजिटल संग्रह तैयार किय जावै, ताकि ई सुरक्षित रहै। तीसरो, उर्स अर पुष्कर मेला जकां आयोजनां में इन रा प्रसार बढ़ाय जावै। चौहान (2008)[49] रै सुझाव रै आधार प, लोक कलाकारां नै प्रोत्साहन देकर भी ई थाती बचायी जा सकै।

ई शोध री रोशनी में भविष्य री दिशा भी साफ होवै। नयी पीढ़ी तक ई गीत पहुंचाण रै लिय तकनीक रा उपयोग करणो चाहिजै। यू-ट्यूब, सोशल मीडिया अर एप्स रै माध्यम सूं ई गीत लोक तक पहुंच सकै। साथै, शोधकर्ताओं नै इन गीतां पे अर गहराई सूं काम करणो चाहिजै, ताकि इन री हर पंक्ति रा अर्थ समझ्या जा सकै। अजमेर मेरवाड़ा रै लोकगीत धरम, आस्था अर रिवाजां री कहाणी कहै, अर इन रा संरक्षण सूं ही ई क्षेत्र री सांस्कृतिक धरोहर बची रह सकै। ई शोध रा मकसद भी यही है कि ई गीतां री महत्ता नै उजागर करकै इन रै बचाण रै लिय एक कदम उठाया जा सकै।

8. सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. सहल, कन्हैयालाल. *राजस्थानी लोकगीत संग्रह.* जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 1985.
2. चूण्डावत, लक्ष्मीकुमारी. *लोक गाथा अर गीत.* उदयपुर: साहित्य संस्थान, 1972.
3. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
4. सहल, कन्हैयालाल. *राजस्थानी लोकगीत संग्रह.* जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 1985.
5. चूण्डावत, लक्ष्मीकुमारी. *लोक गाथा अर गीत.* उदयपुर: साहित्य संस्थान, 1972.
6. भाटी, नारायणसिंह. *मारवाड़ रा लोकगीत.* बीकानेर: लोक संस्कृति शोध संस्थान, 1990.
7. देथा, विजयदान. *लोकजीवन री ललकार.* जोधपुर: राजस्थानी लोक साहित्य परिषद, 1975.
8. राठौड़, गोविंदसिंह. *संतां रा सुर.* अजमेर: सूफी साहित्य मंच, 2003.
9. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
10. 'भ्रमर', भंवरलाल. *राजस्थानी भक्ति गीत.* जयपुर: राजस्थान साहित्य अकादमी, 1988.
11. शर्मा, सत्यनारायण. *राजस्थानी लोक साहित्य.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 1978.
12. रामसिंह, ठाकुर. *अजमेर री लोक कथाएं अर गीत.* अजमेर: लोक कला मंडल, 2000.

13. सहल, कन्हैयालाल. *राजस्थानी लोकगीत संग्रह.* जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 1985.
14. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
15. शर्मा, सत्यनारायण. *राजस्थानी लोक साहित्य.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 1978.
16. चूण्डावत, लक्ष्मीकुमारी. *लोक गाथा अर गीत.* उदयपुर: साहित्य संस्थान, 1972.
17. जोशी, शंकरलाल. *रिवाजां री रागणी.* जयपुर: राजस्थान लोक कला संस्थान, 1980.
18. डांगी, कन्हैयालाल. *लोक संस्कृति री पहचान.* जोधपुर: मरु प्रकाशन, 1995.
19. आसिया, गिरधर. *मेरवाड़ा री बोलियां.* उदयपुर: राजस्थानी साहित्य संस्था, 1982.
20. सिंधायच, दयालदास. *मेवाड़ री लोक धुन.* उदयपुर: मेवाड़ साहित्य समिति, 1998.
21. व्यास, मुरलीधर. *राजस्थानी रंग.* जयपुर: साहित्य भवन, 1996.
22. डांगी, कन्हैयालाल. *लोक संस्कृति री पहचान.* जोधपुर: मरु प्रकाशन, 1995.
23. आसिया, गिरधर. *मेरवाड़ा री बोलियां.* उदयपुर: राजस्थानी साहित्य संस्था, 1982.
24. जोशी, शंकरलाल. *रिवाजां री रागणी.* जयपुर: राजस्थान लोक कला संस्थान, 1980.
25. व्यास, मुरलीधर. *राजस्थानी रंग.* जयपुर: साहित्य भवन, 1996.
26. सिंधायच, दयालदास. *मेवाड़ री लोक धुन.* उदयपुर: मेवाड़ साहित्य समिति, 1998.
27. चूण्डावत, लक्ष्मीकुमारी. *लोक गाथा अर गीत.* उदयपुर: साहित्य संस्थान, 1972.
28. भाटी, नारायणसिंह. *मारवाड़ रा लोकगीत.* बीकानेर: लोक संस्कृति शोध संस्थान, 1990.
29. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
30. सिंधायच, दयालदास. *मेवाड़ री लोक धुन.* उदयपुर: मेवाड़ साहित्य समिति, 1998.
31. सहल, कन्हैयालाल. *राजस्थानी लोकगीत संग्रह.* जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 1985.
32. शेखावत, भैरुसिंह. *गीतां री गंगा.* बीकानेर: सांस्कृतिक प्रकाशन, 1992.
33. आसिया, गिरधर. *मेरवाड़ा री बोलियां.* उदयपुर: राजस्थानी साहित्य संस्था, 1982.
34. शर्मा, सत्यनारायण. *राजस्थानी लोक साहित्य.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 1978.
35. देथा, विजयदान. *लोकजीवन री ललकार.* जोधपुर: राजस्थानी लोक साहित्य परिषद, 1975.
36. राठौड़, गोविंदसिंह. *संतां रा सुर.* अजमेर: सूफी साहित्य मंच, 2003.
37. व्यास, मुरलीधर. *राजस्थानी रंग.* जयपुर: साहित्य भवन, 1996.
38. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
39. मीणा, रामलाल. *धरम री डोर.* कोटा: लोकगीत प्रकाशन, 2005.
40. व्यास, मुरलीधर. *राजस्थानी रंग.* जयपुर: साहित्य भवन, 1996.
41. जोशी, शंकरलाल. *रिवाजां री रागणी.* जयपुर: राजस्थान लोक कला संस्थान, 1980.
42. शर्मा, सत्यनारायण. *राजस्थानी लोक साहित्य.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 1978.
43. शेखावत, भैरुसिंह. *गीतां री गंगा.* बीकानेर: सांस्कृतिक प्रकाशन, 1992.
44. देथा, विजयदान. *लोकजीवन री ललकार.* जोधपुर: राजस्थानी लोक साहित्य परिषद, 1975.
45. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.
46. चूण्डावत, लक्ष्मीकुमारी. *लोक गाथा अर गीत.* उदयपुर: साहित्य संस्थान, 1972.
47. देथा, विजयदान. *लोकजीवन री ललकार.* जोधपुर: राजस्थानी लोक साहित्य परिषद, 1975.
48. शर्मा, सत्यनारायण. *राजस्थानी लोक साहित्य.* जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 1978.
49. चौहान, हरनाथसिंह. *अजमेर री शान.* अजमेर: अजमेर साहित्य संगम, 2008.

•